Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 7, Issue 12, November 2018
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

नक्सलवादका अतीत और वर्तमान में नेपाली माओवादी से संबंध भारतीय सुरक्षा के भविष्य की चुनौती के रूप में

निखिल कुमार सिह
Associate Professor, Department of Defense and Strategic Studies

सारांश

नेपाल हिमालय की उपत्यकाओं में बसा हुआ एक छोटा–सा देश है यह भारत और तिब्बत के बीच स्थित है और अब तिब्बत पर चीन के अधिपत्य के बाद भारत व चीन एक बफर स्टेट का कार्य करता हैं यह विश्व का एक मात्र हिन्दू राज्य हैं इसकी स्थापना पृथ्वी नारायण षाह (1723–1774) ने 1769 में कीं आधुनिक नेपाल के निर्माता पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल की विदेशी नीति का निर्धारण करते हुए कहा, ''यह देश चट्टानों के बीच खिले हुए फूल के समान हैं हमें चीनी सम्राट के साथ'' मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने चाहियें पर वह बहुत चालाक हैं'' अपने दो पडोसियों में से वह भारत को खतरे का अधिक बड़ा स्रोत मानता था पिछले 200 वर्शों के इतिहास में नेपाल की विदेश नीति की प्रधान विशेषता यह रही है कि दोनों पडोसियों में से जो बलवान हो उसे खुश रखों।

परिचय– भारत के उत्तर पूर्व में स्थित नेपाल सामारिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं चीन द्वारा तिब्बत को हस्तगत कर लेने के बाद भारत–चीन सम्बन्धों में नेपाल की सामरिक स्थिति का राजनीतिक महत्व बढ गयां उत्तर में भारत की सुरक्षा आज एक बडी सीमा तक नेपाल की सुरक्षा पर निर्भर करती हैं पं0 नेहरू ने 17 मार्च, 1950 को कहा था, ''जहां तक कुछ एशियाई गतिविधियों का सम्बन्ध है, भारत तथा नेपाल के बीच किसी प्रकार का सैन्य समझौता नहीं है लेकिन नेपाल पर किये जाने वाले किसी भी आक्रमण निष्चित रूप से भारतीय सुरक्षा के लिए खतरा होगां'' अक्टूबर 1956 में डॉ0 राजेन्द्र प्रसान ने अपनी नेपाल यात्रा के दौरान कहा था कि नेपाल की शान्ति और सुरक्षा के लिए कोई भी खतरा भारतीय शान्ति और सुरक्षा के लिए खतरा हैं नेपाल के मित्र हमारे मित्र है और नेपाल के शत्रु हमारे शत्रु हैं'।

नेपाल कुछ समय से माओवादी हिंसा से त्रसत रहा हैं गृह युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थीं माओवादी समस्या नेपाल का आन्तरिक मामला हैं परन्तु सबसे नजदीक और मित्र देश होने के कारण भारत का का नेपाल की घटनाओं से चिन्हित होना स्वाभाविक हैं क्योंकि उ0प्र0 काफी पहले से ही नेपाल के माओवादियों के खतरे से जूझ रहा है लेकिन राज्य सरकार ने पहली बार इसे स्वीकार कियां नेपाल के माओवादियों से राज्य को गम्भीर खतरा पैदा हो गया हैं उसे किसी भी की कीमत पर बर्दाशत नहीं किया जा सकता है राज्य सरकार ने यह भी कहा कि राज्य को नेपाली माओवादियों का सुरक्षित स्वर्ग नहीं बनने दिया जावेगां नेपाल के माओवादी उतरांचल के साथ ही नेपाल से जुडी राज्य की सीमा पर अपनी सुनियोजित गतिविधियां काफी पहले से बढा रहे हैं लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोरखपुर आदि जिलों में प्रायः उनकी गतिविधियों की चर्चा होती रही हैं लेकिन नेपाल के राजा ज्ञानेन्द्र द्वारा वहां आपातकाल की घोषणा तथा उनसे युद्ध की घोषणा से उनके राज्य में घुसपैठ बढाने के समाचार मिले हैं जबकि माओवादियों ने पहले ही लखीमपुर खीरी के पूर्वी हिस्से ओर उत्तरांचल को अपना नियंत्रण क्षेत्र घोषित कर रखा है यह गम्भीर खतरे की घण्टी हैं लेकिन सरकार राज्य के किसी भी हिस्से में उनकी गतिविधियों को अंजाम देने की इजाजत नहीं देगीं।

उ0प्र0 में बढ़ते हुए माओवादी आतंकवाद को रोका जाये जिससे माओवादी आंतकवाद के प्रभाव से उ0प्र0 को बचाया जा सकें जमीन से पूरी तरह घिरा बिहार उत्तर में हिमालय तक फैला है इसके उत्तर में नेपाल दक्षिण मे झारखण्ड, पूरब में पश्चिम बंगाल और पश्चिम में उ0प्र0 हैं बिहार में भी बढते हुए माओवादी को देखते हुए नेपाली सेना द्वारा माओवादियों के विरूद्व व्यपक कार्यवाही के बाद उग्रवादियों के बिहार में प्रवेश की बढती आशंकाओं के मद्देनजर राज्य सरकार ने भारत–नेपाल सीमा पर सतर्कता तेज कर दी है तथा केन्द्र सरकार से सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था और कठोर करने के लिए केन्द्रीय अर्द्ध–सैनिक बलों की बीस कम्पनियां उपब्लध कराने का आग्रह किया है, नेपाल में सक्रिय माओवादियों का सम्पर्क बिहार और झारखण्ड में सक्रिय विभिन्न उग्रवादी संगठनों से भी है और नेपाल में जारी सैनिक कार्यवाही के कारण उग्रवादियों का बिहार में प्रवेश करने की आशंका बनी हुई हैं गृह विभाग के एक प्रवक्ता ने यह बताया कि हाल ही में केन्द्रीय गृह मंत्रालय को प्रेशित एक पत्र में भारत नेपाल सीमा पर तैनत के लिए अर्द्ध–सैनिक बलों की बीस कम्पनियां उपलब्ध कराने की मांग की गयी है तथा सीमा पर से उग्रवादियों की घुसपैठ रोकने के लिए भारत नेपाल सीमा पर फिलहाल एसएसबी की तीन कम्पनियां को कुछ महत्वपूर्ण स्थानों पर तैनात किया गया है और माओवादियों के बिहार में प्रवेश को रोकने के लिए हर सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं।

झारखण्ड के उत्तर में बिहार, दक्षिण में उड़ीसा पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में छत्तीसगढ़ एंव उ0प्र0 स्थित हैं झारखण्ड में भी माओवादी आतंकवाद तेजी से फैलता तब नजर आया जब झारखण्ड के चतरा जिले में प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन माओवादी कम्युयनिस्ट सेंटर (एमसीसी) के उग्रवादियों द्वारा एक पुलिस वाहन पर घात लगाकर किये गये हमले में वरिष्ठ नगर थाना प्रभारी समेत नौ पुलिस कर्मी मारे गये तथा पांच अन्य घायल हो गयें उग्रवादी पुलिसकर्मियों के

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 7, Issue 12, November 2018
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

हथियार व गोलियां भी लूट ले गये थे, घटन के संबंध में बताया जाता है कि पुलिसकर्मी अपना वेतन लेने व गाड़ी की बैटरी बदलवाने के लिए चतरा जा रहे थे तभी संघरी घाटी के निकट घात लगाये उग्रवादियों ने पहले पेट्रोल बम से हमला किया था जिससे वाहन का संतुलन बिगड़ गया थां पुलिसकर्मी कुछ समझ पाते इससे पहले उग्रवादियों की भीषण फायरिंग में थाना प्रभारी समेत नौ लोग मारे गये तथा पांच अन्य घायल हो गये थे पेट्रोल बम के हमले में वाहन के परखच्चे उड़ गये थें घायल पुलिस कर्मी एक गढ्ढे में छिप गये तभी बच पाये थे बाद में धायल सिपाही भागकर वरिष्ठ नगर थाने पहुंचा जहां से वायरलेस द्वारा चतरा व अन्य जगहों पर घटना की सूचना दी गयीं उग्रवादी, पुलिसकर्मियों की दो नाइन एमएम पिस्तौल, आठ राइफलें तथा सात सौ से अधिक गोलियॉं समेंत अन्य हथियार लूट ले गयें घायल सिपाहियों ने कुछ देर तक उग्रवादियों से लोहा लिया, लेकिन उग्रवादी घने जंगल का फायदा उठाकर भागने में सफल रहें वरिश्ठ पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी घटना स्थल पर पहुंच गये थे तथा उग्रवादियों की गिरफ्तारी के लिए सघन छापेमारी की गयी, पुलिस ने संघरी घाटी को घेर भी लिया, घटनस्थल वाले मार्ग को दोनों और से सील भी कर दिया लेकिन फिर भी किसी को गिरफ्तार नहीं कर पाये थें उग्रवादियों द्वारा झारखण्ड में पुलिस कर्मियों को इस तरह मारने की घटनायें इस बीच काफी बढी हैं मरांडी सरकार की बार–बार की घोषणाओं के बावजूद भी उग्रवादी इस तरह की घटनाओं को अंजाम देने में सफल रहते हैं।

भारत के उ0प्र0 बिहार, झारखण्ड में जो माओवादी आतंकवाद फैल रहा है इस आतंकवाद को भारत को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करना चाहिये जब नेपाल में बढते हुए माओवादी आतंवाद धीरे–धीरे पूरे भारत में फैल जाये तो भारतीय सुरक्षा पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? इसका अनुमान हम लगा सकते हैं क्यों कि नेपाल माओवादियों को कामतापुर लिबरेशन आर्गनाइजेशन (केएलओ), उल्फा, एमसीसी तथा पीडब्ल्यूजी जैसे भारत के उग्रवादी संगठनों से मदद मिल रही हैं' हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली दिनांक 7 अगस्त, 2001 में भारत के जलपाईगुडी के पुलिस सूत्रों के हवाल से यह खबर देते हुए कहा गया कि उल्फा म्यांमार से हथियार लाकर के एल ओ को देती है जो माओवादी को देते हैं बदले में नेपाल के माओवादियों ने केएलओ को प्रशिक्षण देने का वायदा किया हैं इसी अखबार में दिनांक 19.02.2002 को छपी एक खबर में राहुल दास ने पुलिस सूत्रों के हवाले से खबर दी है कि नेपाल के माओवादियों का भारत के एमसीसी और पीडब्ल्यूजी से पक्का संबंध हैं लगता है कि इन खबरों के बाद ही भारत सरकार ने नेपाल से लगी सीमा पर चौकसी बढाने का निर्णय लिया और वहां विषेश सशस्त्र बल के जवानों को तैनात किया गया हैं

नेपाल के माओवादी आन्दोलन के तार जहां भी जुडे हो परन्तु भारत के लिए चिन्ता की बात हैं पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था आई एस आई की नेपाल में बढती गतिविधियों तथा माओवादी हिंसा को अलग–अलग करके देखने से समस्या और भी गम्भीर हो सकती है, ऐसा कुछ पर्यवेक्षकों का ख्याल हैं बहर हाल माओवादी हिंसा से निर्दोश नेपालियों का खून ही बह रहा है, जिससे घाटी के लोग आक्रान्त एवं भयभीत हैं दिनांक 18 अप्रैल, 2002 को काठमांडू पोस्ट में प्रकाशित अपने लेख में प्रकाश ए0राज ने विचार व्यक्त कया कि ''नेपाल के तराई के चार जिलों कंचनपुर, कैलाली, बरदिया और बांके में माओवादियों का प्रभाव काफीये जिले उ0प्र0 के बहराइन से लेकर बनवसा से सटे हुए हैं, जो दिल्ली से बहुत करीब हैं।

नेपाल से सटी सीमा होने के कारण आई एस आई को भारत में जाली नोट,हथियार विस्फोट पदार्थ तथा मादक पदार्थों की तस्करी में आसानी हाती हैं उ0प्र0 के रास्ते हथियारों एंव अन्य सामान को भारत के दूसरे भागों में पहुंचाया जाता हैं 6 सिंतबर, 2002 को उ0प्र0 पुलिस ने आईएसआई के 5 ''आपरेटिव 8 को गिरफ्तार किया तथा उनसे संवेदन शील कागजात एवं सामग्री बरामद कीं यह लोग काठमाण्डू स्थित पाकिस्तानी दूतावास को संवेदन शील कागजात उपलब्ध करवाने वाले थें इसी बीच 3 सितम्बर 2000 को उ0प्र0 पुलिस ने आगरा और अलीगढ में दो हिज्ब–उल–मुजाहिदीन से संबंधित आंतकवादियों को गिरफ्तार किया पूछताछ के दौरान इन आंतकवादियों ने फैजावाद, लखनऊ और कानपुर में किये गये बम विस्फोट में अपनी भूमिका को स्वीकार कियां''।

आई एस आई ने उ0प्र0 स्थित अलीगढ जिले में मुस्लिम विश्वविद्यालय में मुस्लिम छात्रों में भी अपनी पैठ गहराने के प्रयत्न किये हैं अक्टूबर 2000 में आई एस आई के एजेंट हाजी सुलमान की गिरफ्तार के उपरांत उसके पास से कुख्यात आंतकवादी अजहर मसूद के भडकाऊ भाषणों की 13 कैसेअ, कई हैंड ग्रेनेड और महत्वपूर्ण कागजात बरामद कियें गिरफ्तारी से पूर्व हाजी सुलेमान, मेरठ, सहारनपुर, हरिद्वारा, दिल्ली तथा हरियाणा की कई मस्जिों में भडकाऊ भाषण दे चुका थां लश्कर–ए–तैय्यबा से जुडे मदनी की गिरफ्तारी के बाद मधुबनी एक बार फिर से सुर्खियों में आ गया हैं भारत –नेपाल सीमा पर स्थित सामान्य तौर पर श्शांत माने जाने वाले इस जिले से जुडे तीन बड़े आंतकवादियों की गिरफ्तारी लोगों की चिंता का विषय हैं।

मदनी जिले के बासोपट्टी का मूल निवासी हैं सन 1996 में नेपाल की नागरिकता लेकर वह सप्तरी जिले के महरैल में बस गया थां जहां से मधुबनी समेत सीमावर्ती इलाके के जिलों में शिक्षित युवाओं को आंतकी संगठनों में प्रशिक्षण के लिए भेजता रहा हैं बताया जाता है कि वह पहले भारतीय क्षेत्र में रहकर ही आंतकी संगठनों के लिए काम करता थां लेकिन पासपोर्ट

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 7, Issue 12, November 2018
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

बनाने मे हो रही परेशानी और रूपयों के लेन–देन की दिक्कतों के कारण उसने नेपाल की नागरिकता ग्रहण कर लीं गिरफ्तारी से कुछ दिन पूर्व भी पटना, चेन्नई और दिल्ली से युवाओं को उसने आंतकी प्रशिक्षण के लिए भेजा हैं।

मदनी की गतिविधियों की जानकारी केन्द्रीय खुफिया विभाग को कुछ दिनों पूर्व हो चुकी थीं इसी सिलसिले में खुफिया टीम एक सप्ताह पहले जिले का दौरा कर चुकी थीं टीम ने लदनिया, लौकही, देवधा, पदमा, उमगांव, मधवापुर और बिस्फी के विभिन्न गांवों में जानकारी इकट्ठा की थीं जिससे मदनी की गिरफ्तारी संभव हो सकीं माना जा रहा है कि मदनी जैसे आतंकियों के संरक्षण में कई सफेद पोश जुटे हुए हैं खुफिया सूत्रों के अनुसार मुबंई बम विस्फोट घटना में बासोपट्टी के ही मोहम्मद कलाम की संलिप्तता एवं गिरफ्तारी के बाद मधुबनी के आतंकवादियों की शरणस्थली के रूप में चिन्हित किया गयां। बेंगलुर रिसर्च में हुई बम विस्फोट में भी जिले के पंडौल थाना गंधवार निवासी सबाउद्दीन के तार जुडे होने की पुष्टि हो चुकी हैं सबाउद्दीन को खुफिया विभाग के गिरफ्तार किया था पर क्षेत्र में चिंता इस बात की है कि आतंकी की निशान देही के बावजूद न राज्य के खुफिया विभाग और न स्थानीय पुलिस इससे जुडे लोगों का पता लगाने में कोई दिलचस्पी दिखा रही हैं मदनी का नेपाल में बडा कारोबार हैं धंधे की आड में विस्फोटक व मादक पदार्थों की सप्लाई के साथ जाली नोट के धंधे, फर्जी पासपोर्ट के रैकेट का संचालन करता रहा हैं भारत नेपाल सीमा पर मदरसों एवं मस्जिदों का एक जाल सा बिछ गया हैं इस क्षेत्र में 121 नये मदरसे एवं 146 मस्जिदें बनी हैं भारत में उ0प्र0 के तराई इलाके एवं पहाड़ी क्षेत्र में भी आई एस आई ने अपनी पैठ बना ली हैं जहां इसके एजेंट सक्रिय रूप से भारत विरोधी गतिविधियों से संलग्न रहते हैं।

उपरोक्त घटनाओं के संदर्भ में अपनी समझ को विकसित करने तथा आज की बदलती घटनाओं को समझने के लिए हमारी समझ में प्रचंड की टिप्पणियों से ही शुरू की जानी चाहियें उनकी राय में भारत और नेपाल के बीच पुरानी संधियों से भविष्य में काम नहीं चल सकतां ऐसे अभी समझौते गैर–बराबरी की हालत में संपन्न हुए थे और दोनों ही देशों तत्कालीन नेतृत्व ने अपने–अपने नजरियें से सामरिक मुद्दों को सर्वाधिक महत्व देते हुए इनका निरूपण किया थां इस बात को भुलाना कठिन है कि अभी हाल तक भारत सरकार के विदेश और रक्षा मंत्रालयमें यह राय रखने वालों की कमी नहीं थी कि नेपाल के माओवादी भारत के लिए बडा खतरा है, जहां के नक्सलियों के प्रेरणा स्त्रोत और उनके मददगार हैं इनके दमन शमन के लिए राजा ज्ञानेन्द्र की सेना को हथियार देने की सिफारिश कई अवकाश प्राप्त और सेवारत जनरल करते रहे हैं भारत सरकार में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं, जिनका मानना है कि नेपाल की स्थिरता के दो स्तंभ है जनतांत्रिक पार्टियां और राजशाहीं इन लोगों की नजर में राजा नेपाल का प्रतीक पुरूष है और उसकी एकता को पुष्ट करने वालां अल्पशिक्षित, अभावग्रस्त नेपालियों के लिए राजा चाहे कोई भी हो, दैवी अधिकार संपन्न महापुरूष है और राजवंश का उन्मूलन वह नहीं स्वीकार करेंगें बगैरहं नेपाल की नौजवान पीढी और दूर–दराज देहात में रहने वाले भी तेजी से बदलती दुनिया और अपने देश की असलियत से बेखबर नहीं हजारों नेपाली रोजगार की तलाश में न सिर्फ हिन्दुस्तान आते हैं, बल्कि खाडी देशों और सऊदी अरब, अफगानिस्तान, इराक तक पहुंचते हैं फौज की नौकरी हो या चौकीदारी इनके आंख–कान बन्द नहीं रहतें यह बात भी याद रखने लायक है कि माओवादी संघर्ष के दौर में राजनैतिक चैतन्य का प्रसार नेपाल के उस बहुत बडे इलाके में हुआ है, जिस पर माओवादियों का कब्जा थां भारत के नीति निर्धारकों के लिए यह बात समझ लेना उपयोगी होगा कि आज के बदले संदर्भ में नेपाल की राजनीति में माओवादी ही निर्णायक घटक हैं चाहे वे हथियार बंद हो या निहत्थें भारत को अब यह मुगालता नहीं पालना चाहिये कि नेपाल का घटनाक्रम उसकी इच्छानुसारया भारतीय मूल के मुट्ठीभर उद्यमियों–उद्योगपतियों के स्वार्थ के अनुसार संचालित हो सकता है आज के भारत–नेपाल और दुनिया 1950, 1962, 1971, 1989 या किसी और लाल तारीख वाले भारत–नेपाल और दुनिया नहीं हैं प्रचंड की बातों को थोडा बहुत समझने वाले अंदाज में बांचा जाना चाहियें एक नये समतापूर्ण करार का वक्त आ चुका हैं इसके साथ ही जोडने की जरूरत है कि समता का अर्थ समर्पण, तुष्टिकरण नहीं समझा जाना चाहियें भारत को किसी भी मामले में किसी भी तरह का अहंकार हठ पालने की जरूरत नहीं, पर यह बात अपने नये नेपाली साथियों के सामने बिल्कुल साफ कर देनी चाहिये कि उनसे हमारी क्या आशा–अपेक्षा है और वह कौन से बुनियादी हित है जिनको अनदेखा नहीं किया जा सकतां।

इस देश में सभी जिम्मेदार नागरिकों को यह बात गांठ बांध लेनी चाहिये कि इस बारे में नेपाली कोई दखलअंदाजी बर्दाश्त नहीं करेंगे कि उनके देश में कौन सी राजनीति व्यवस्था और प्रणाली जड़े जमाती हैं यदि वह राजशाही का उन्मूलन कर गणराज्य की स्थापना करना चाहते है–एक ऐसे जनतंत्र की जिसकी शक्ति भारत से बहुत भिन्न है, तो हमें उस बदली स्थिति का सहर्श स्वगत ही करना चाहियें।

यह ठीक है कि भारत सरकार ने माओवादियों की हिंसा और आतंक को हमेशा गलत ठहरायां लेकिन उनके विरूद्ध कभी कोई सीधी कर्रवाई नहीं की बल्कि पिछले कुछ माह में तो उसने उन्हें सुरक्षा दी, उनसे सीधी बातचीत की और उन्हें मुख्यधारा में लाने का साहरा भी दिखायां कोइराला की भारत यात्रा के दौरान भारत के माओवादियों के विरूद्ध कुछ नहीं कहा तो फिर माओवादी आ बैल, सींग मार क्यों कर रहे हैं ?

यदि माओवादी अपने पूर्वाग्रह नहीं छोडेंगे तो कोई आश्चर्य नहीं कि भारत सरकार भी पूरी तरह लोकतांत्रिकों के पक्ष में जा खड़ी होगीं माओवादियों को खुश होना चाहिये कि अब

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 7, Issue 12, November 2018
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

भारत सरकार नेपाली के बारे में दो स्तम्भों की बात बिल्कुल भूल गयी हैं नरेश के समर्थन का अब कोई सवाल ही नहीं हैं यदि भारत सरकार नरेश के एकाधिकार को जरा पहले अमान्य कर देती तो बेहतर होता, लेकिन अब माओवादी अगर भारत को कोसेंगे तो वे प्रकारांतर से नेपाल–नरेश के ही हाथ मजबूत करेंगें कोइराला की यह भारत यात्रा इस दृष्टि से भी सार्थक है कि भारत के नेताओं को उन्हें नेपाल की वास्तविक राजनीतिक स्थिति से अवगत करवा दिया हैं।

यह स्थिति न आये, इसके लिए भारत को सतर्क रहना होगां नेपाली माओवादियों और हमारे यहां के नक्सलवादियों के बीच रिश्तों की जो बात हमारी सरकार करती रही है, वह अकारण नहीं हैं लिहाजा नेपाल में हुए बदलाव का हमारे यहां कोई प्रतिकूल असर न पडे, इसका खास ख्याल हमारी सरकार को रखना पडेगां यह याद रखना चाहिये कि माओवादी अब नेपाल में किसी के निशाने पर नहीं बल्कि वहां की नई सत्ता व्यवस्था का हिस्सा है हमारे लिए उचित यही होगा कि माओवादियों को वैचारिक चष्में से देखने के बजाय अपनी सुरक्षा के नजरिये से देखें नेपाल की राजनीति आगे किस दिशा में चले, यह तो लोकतंत्रवादियों और माओवादियों को ही तय करना हैं लेकिन भारत की नीति क्या हो, यह तय करने में अब आसानी रहेगीं भारत सिर्फ 100 करोड रूपये देकर ही अपना पल्ला नहीं झाड रहा हैं उसका प्रयत्न यह है कि नेपाल के पुनर्निर्माण में उसकी भूमि वहीं हो, जो दूसरे महायुद्ध के बाद यूरोप के पुनर्निर्माण में मार्शल प्लान की थीं इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए भारत अमेरिका, यूरोप और जापान आदि देशों का भी सक्रिय सहयोग लेगां यह असंभव नहीं है कि व्यापार और पारगमन के लिए भारत नेपाल को अब पहले से भी अधिक सुविधायें देने लगेगां।

संदर्भ–

1. शर्मा डॉ0 राम प्रवेश, – भारतीय विदेश नीति तथा हमारे निकटतम पडोसी, आर0के0 पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
2. शुल्क डॉ0 कृष्णानन्द,– भारत–नेपाल संबंध, अंकित पब्लिकेशन्स
3. सिंह कविता, – नेपाल में बढ़ता हुआ माओवादी आतंकवाद व उसका भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव,
4. शुक्ल डॉ0 कृष्णानन्द, – भारत–नेपाल संबंध, अंकित पब्लिकेशन
5. शुक्ल, राम सागर–अंजान पडोसी, भारत–नेपाल, सनातन प्रकाशन लखनऊ
6. वही,पृ0 55
7. नई दुनिया–7 जून, 2009
8. शुक्ल डॉ0 कृष्णानन्द,–भारत–नेपाल संबंध, अंकित पब्लिकेशन्स